

ASHA ARCHIVES

सर्ववकोऽ। आं वामा धारुणि त्रिषी ॥ ० ॥ पुनरुनरुयकृते न्युजितेय
नविश्वं ॥ ३३ ॥ गस्यायकामनूर्यं मदनकलियुतं सर्वसिधालयं ३३
कोपिकांतिमसमपलमजिवकलालं कृते यागवृन्दं ॥ ३३ ॥ गत्सु
दिशलिङ्गपलमजिवकर्वविन्दुनूर्यं खनूपकीनित्यानन्दसुनूर्यं तद
यत्रिमथनीषुकावविरिनी ॥ ३३ ॥ विद्याशामयगम्यन्नूरवविम
लं विप्रपी ॥ ३३ ॥ लारं जेवंधाफं समस्तं क्लितयजननी नृद
किप्रिया ॥ ३३ ॥ गगनद्वंद्वी नृकुलकुलमया तददाविस्वदं

सु ॥ ॐ ॥ युवार्त्ता विन्दुनायपुनरुयकृते न्युजितेय ॥ ३३ ॥
४ ॥ विप्रकीर्त्तना सुवकारं गमुदिनपदानन्ददापि सिद्धा ॥ ३३ ॥ कर्वनि
युगं कामान् देवि ॥ ३३ ॥ वनं गतं आकुक्कि काख्या नमामि ॥ ३३ ॥ सत्ता
ने मन्मा ॥ ३३ ॥ नृत्तयं गगंदवता ॥ ३३ ॥ निजम ४ ॥ ० ॥ ॐ ॥ काव सिद्धान्तय
पकीर्त्तिना ॥ ३३ ॥ गृष्णीरुगीयुहावासि ॥ ३३ ॥ वृक्षेव कदम्बक ४ ॥ सीकं गम्य
विनीयाक मन्वाचयुहासिनी ॥ ३३ ॥ गृहे चन्दयुर्वयाकी रं दामल्लान
रेनव ॥ ३३ ॥ गृहमनिकादवी वाममा ॥ ३३ ॥ यिकल्लयय ॥ ३३ ॥ नृत्तयं

त्वहं शिवमधिकारैशुकाद्वन। जन्मवृक्षमिलास्तन। स्तिनिष्ठाका
 मयूयक॥ कालिन्धिविनिवृक्षु। सिद्धिमेवदुष्भागन। शुद्धाहं
 गत्यदेवता। याजानागिकुलाक्रमे॥ पाठश्रवणरदन। त्वासंस्कृतं
 कुर्मगथा। पूजितं सिद्धिदंरुद्र। सुमिषायतिवदयन्॥ ॥
 १ॐ नमः शिवाय देवताये॥ चतुर्भुजं चतुर्कलावर्गं स कृत्वा न
 गं कृत्वा मनागसाने। पूज्यं कृपासां कृपापश्चवासां। रुक्मिणमस्तु
 जगदकमाग॥ ॥ शिवशक्त्या युक्ता यदि रवनि शक्त्यपरा

विदुः न वदवदवा. न खलु कुमनस्य निरुमपि। नृनस्यामावाधं।
हनिहृनवि विविद्यादि शिवपि। पदार्थं कथमकृण्वत् ४५
एवमि॥ १ ॥ ननीयीसीपाण्डु. गवचनदार्पकनूहलव. विविचि ४
सीचित्तनविनचयगिलाकातविकली। वहत्येनल्लोनि ४ कथमपि
सहस्रलजिनसा. हन ४ सहस्रत्येनरुजति रसिगाद्यूनविचि॥ २
॥ नृविद्यानात्तस्मिन्निनमिहि नदीपतकनीजजनी वेतन्यस्तवकम
नकनन्दश्रुतिगिला। दत्रिडादी विन्तामनियुहानिकाजन्मजलधो।

निमग्नतां दुःखमत्र विपुवना रुस्य रवणी ॥ ३ ॥ त्वदन्यथा पादित्या
 मरयव नदा देव न गदा स्वमका नेवासि एकटित वना सीति तिन
 या रया यारुं दा उरु लमपि च वाक्शसमधिकं ज्ञानं लोका नी
 गवहि च न ज्ञाते वनियु लो ॥ ४ ॥ हविस्मान्ना धूप दगजने सोला
 यज्ञतनी पुना लानी रत्ना पुन विपुमपि क्षारमनया स्मना पित्वा न
 त्वा न गित नय न लक्ष्म नवपुषा मनीता मय्य न ४ परवति हि माहाय
 मरुगे ॥ ५ ॥ धन ४ पोषी भोवी मधूक न मयी यक्ष वि शिखा वस न ४ सा

संका मलय मन्दाया धन नथा गथा यक ४ सर्व हिम गि विरुग का मपि
 रुपा मया गभ लक्ष्म जगदिदमनं ज्ञा विजय न ॥ ६ ॥ कृदा लोक्षी
 दा मा क निकल रुवी रुसुत रुना पविदी लम मधुप गिन गडा जव द
 वदना ॥ धन चोर्ध्व तया र्ध ४ लिम पिद धना कन गले ४ पुन स्ता दा र्ध
 न ४ पुन मधि उना हा पुन पिका ॥ ७ ॥ मधु र्ध्व र्ध्व मधु र्ध्व विर
 पिवा पीप निवृत्त म सिद्धी यनी पाप धन मति चिन्ता म लिष्ट रु ॥ ८ ॥
 वाकाने म ४ पुन म शिव पय्य ४ निलयी रुज नी र्ध्व न्या ४ कनि

चन्द्रविद्यानन्दलहरी ॥ ६ ॥ मर्हं मूलाधनं कसपि सति पूर्वदूत
 बहं ४ स्तिगिस्वाधिसूक्तान्छदिमन्नमाकाशमूपनिमनापिद्रुसध
 सकनमपिरित्वाकूनयर्थः सहस्राजयश्चसहनहसिपत्न्याविह्व
 सि ॥ २ ॥ सुधाधनासावेधनस्यगलात्तद्विगलिने ४ उपपञ्चुक्ति सञ्च
 पुनत्रपिनसाम्नायमहसा ॥ त्रवार्यस्वीहर्मिभुजगनिरमधुस्रव
 लयाः स्वमात्मानेकत्वात्पिषिकूलकृष्टकृहविलि ॥ १० ॥ चद्रुलि ४
 श्राकल्ले ४ गिवयूवगिरि ४ पञ्चरित्रध ४ पुरिन्नालि ४ शान्तवलि

नपिसूत्रपुत्रुनिरि ४ ययश्चत्वारिंशदसूदलकलाकुण्डिवलभं प्रि
 लवारि ४ सार्धतवरवनकाहपविशगा ४ ॥ ११ ॥ त्वदीयसौन्दर्यं
 हिनेगिबिकन्यउलयिर्दुमिकवीन्द्रा ४ कल्पककथमपिवित्रीचिप
 रगय ४ यदालोकात्सुकादमनललनाया निमनसा गथा सिद्ध्या
 यामपिगिनिष्ठासायुष्यपदवीं ॥ १२ ॥ नगवर्षीयसंनयनविनसं
 तर्मसुजडं नवापाज्ञालोकपतिगमनूधवन्निष्ठागद्य ४ गलद्वेदाव
 धा ४ कूचकलहाविहासुहोतमाह ० अग्रका ४ विगलिनदकूलाय

वगय ४॥ १३ ॥ द्वितीयेष्टयश्च द्वाविडामधिकर्पेवाङ्गदकद्रुगाह
 दावष्टिश्च उन्नधिकपश्च दानिन । द्विविदिष्टयष्टिष्टान्मनसिच
 चउषष्टिनिगय मयूषास्तुवामयूपविगवपादाम्बुजयुगी ॥ १४ ॥
 षानश्रीत्ताष्टुष्टाष्टिष्टयुगजटाशदमूकटी वनगामगाहस्तुष्टिकयु
 टिकापुस्तककनी । सुस्तनत्त्वानत्वाकथमिवनगांसन्निदधन मधूदी
 नडाक्षामध्वमध्वीनारुनिगय ४॥ १५ ॥ कवीन्द्राष्टाष्टिष्टकमल
 वतमालागपवृष्टिष्टरजस्तयस्तुष्टकनिविदनुष्टमदरवनी । दि

विचित्रयस्यास्तु नलननष्टज्ञानलहनीं गरीना रिर्वाग्निर्विदुमि स
 रानभूतनमनी ॥ १५ ॥ सविगिरिर्वावांजि। डिम सि डि लारंगव दि
 रिर्वागिन्याद्या रिस्तु सहज ननि सविक्तय गिय ४। सकलकायानी
 एवतिमहनीं गिस्तु रगे र्ववा रिर्वाग्निर्विदुमि स
 ने ४ ॥ १७ ॥ गनुकाया रिस्तु ननु राननु सिंघा सन सि रिर्वाग्निर्विदुमि स
 र्वीमनु रानम सिमगनी स्मन गिय ४। एवन्त्यस्य रुस्य दन रु नि रान
 लीन नयना ४। सहा र्व श्वावग्नि ४ कनिक नितगा र्वी रान गनिका ॥ १८

मूर्खविन्दुं कृत्वा कुचयुगमधरुम्यगदध्वं रुका नार्द्धम्ययं न
 महिषिणमन्मथकली। सप्तशृङ्गसंकारेनयतिवनितामित्यपिलघ्
 णिलोकीमया शुभ्रमय विनवीन्दुस्तयुगं ॥ १९ ॥ किनकीमं ज्ञेय
 ४ किनहानिकूर्नेवा मृतनसं हृदि त्वामाधरुहिमकनडिलामृदि
 निवयः ४। सप्तपार्श्वदर्यं ज्ञामयति ४। कृत्वा धिषण्णवकलसुखं दृष्ट्वा
 ज्ञामयति सुधाधनसदृश ॥ २० ॥ गदिज्ञत्वा गन्ती गयनडा डिनेश्च
 ननमयी निषर्णुमप्यविकमलानी गवकली। महायज्ञा गयी

वल्गु १

क १
 मृदिगमलमायमूनसा महात्तु ४ यग्यत्ता दधनियनमाज्ञादलहवी
 ॥ २१ ॥ एवानी त्वदासे मयि विगनटर्हि स कन्धम। मितिस्का शुवा शुभ्रम्
 कथमपि एवानित्वमिति यः ४। गदेव त्वेगस्मे दिगडिनिजसायुश्च
 पदवीं मृकन्दवक्त्रं च मृकटनीला जितयदी ॥ २२ ॥ त्वय कृत्वा
 वामं वपुनपनिहफतमनसा। शनीनार्द्धाक्षानपनमपिर्गकहतम
 रुगा। गथाहित्वद्वयसकलमन्तरं पितनयने कृत्वा त्वामानसं कृदि
 लडा डि वृजानमृकट ॥ २३ ॥ जगत्सूत धागाहमिनवमिन्नुदक

ययन गिजकुर्वन्तगत्समपिवयु नीहास्तिलयन सदादूर्ध्वधर्व
 रुदिदमनूयुक्ता निचठिव सुदाहु मा लंयकृदाव विनयां नूलनि
 कया ॥ २४ ॥ अयाधर्मदवासां गिगुदाज निगाना मपिठिव रवसू
 जादूजागववनदथार्या विनविगा गथाहितवत्यादादुहूनमदियी ०
 स्थनिकट स्किगाद्यगंघ्यं नू मकृलितकनो रं समूटी ॥ २५ ॥
 विनिष्ठि ४ य ५ त्वैवजनिह निनाप्रा निविनर्नि विनार्जी कीन एवज
 निधन दायानि मिधनी विगन्दी माहन्दी विगनिन पि स मीन निठम्भी

महासीहानस्मिन् विह्वनितगित्वत्यनिनसो ॥ २६ ॥ अयाजल्य ४
 जिल्यं सकलमपि मूडा विनचनी गति ४ पादद्विस्थक मरा मदन्याद्या
 दूगविधि ४ प्रहमे ४ सवे ४ सुखमखिलमात्मार्यदादशा सपय्याय
 ययिस्तव एवगुजभविनठिर्न ॥ २७ ॥ सुधमया म्याद्यप निरयज
 नामृत्पुह्वनली विपद्यभ विस्थविधिगमस्वाद्यादिविषद ४ कना
 लीय दं कवलितवत ४ कालकलाना नहाभास्तमूलितवजननि
 नाटिकमहिमा ॥ २८ ॥ दद्यानदीनत्य ४ श्रियमनिहामा शनसदृशा

ममर्द्धशोच्यं सुवकमकनन्दविकिनतिगवास्मिन्मन्दानसुवक
सुरलायाउचनला निमर्जन्मजीवः कनसवनरहोषचनना ॥ २९ ॥
२२ ॥ किलिर्भवेनिश्चस्यनिदुनयवः केटसरिदः कलनका
टीनेखलसिजहिजका निमर्दः पुदासधनयुपसरमरियागस्य
रवनीहनस्मात्कृताननवयनिजनाकिर्विजयन ॥ ३० ॥ वः ४
वध्यागर्कः ४ सकलमसिर्धायशुवनीलीगसुहसिद्विप्रसनपन
गर्कः ४ यद्युपनिः ४ पुनस्वतिर्विधायदखिलयन्वार्थकमननस्यन

न
कुं गुरुद्वितितलमयागीतनदिदं ॥ ३१ ॥ शिवः ४ किः ४ कामः ४ दि
निनधनविः ४ गतकीनराः ४ स्मकाहंसः ४ कुरुदनवयनामानहवय
४ ॥ भूमीरुहस्रवारिस्तिहृतिनवधमनषुघतिगाशुजन्वकुस्तिग
वजननिनामवयवती ॥ ३२ ॥ स्मनतूयानिलकीं प्रियविगमा
द्यगवमना निधायकनिथनिधवधिमेहाकागनसिका ॥ उपनिः
त्वीविन्तामसिगुलनिवजादवलया शिवाः ४ शीर्षकनसुनरिएतध
नाइतिगो ॥ ३३ ॥ शानीनर्त्यशकाः ४ शिमिहि नवकावहयग

ASHA ANIMES

1.217

मिनमः॥ उँमिनायेयादृकांनष्यामिनमः॥ वलि॥ ॐ नित्यं
॥ ॥ उँवहिवृक्षांनयेयादृकांनष्यामिनमः॥ उँनायायनयेयादृकां
नष्यामिनमः॥ नद्वहिः॥ अष्टपुत्रं॥ ऊँअनके ग्वनानेः खड्गन
वलिविय॥ १॥ उँमाहृष्ययेयादृकांनष्यामिनमः॥ वृक्षाः
न्यादिथ॥ ॥ धनामूलमनुनयत्रमं धनीयागिरसः खनः स्त्र
ननय॥ आवाहनादिः आनिमूढा॥ ॥ धनामालकापूजायाया॥ ननी

हूपन ॥ गंगी गुंग ४ (गने) गनपटपादूकी ॥ वाँवाँवूवदूकनाथ
ययादूकी ॥ काँकाँकूकठपालाययादूकी ॥ याँयिँयूँथागिनीया
दूकी ॥ ॥ ज्ञानादि नमोऽस्तु ॥ दण्डलाकपालाथेत्यादि ॥ ॥
आवाक्ष ॥ अष्टपूजा ॥ ॥ खंखंकायेनम ॥ मंमंक्षुय २ ॥ वंवना
ये २ ॥ जंजंरुयाये २ ॥ ॥ वतंगकीनम ॥ आवाक्ष ॥ ॥ ॥
नाडिनमस्तु ॥ ॥ उंअस्यशान्तिनमस्तु ॥ अक्षयः ॥ ॥
हे नवमुषि ४ संसाधून् ४ छिनमस्तु ॥ देवनाक्षयः ॥ ॥ ॥

वर्षकीलकं पूजने विनिधाग ॥ ॥ न नान्यास ॥ ओं खजाय अम्बुका ह्यं
नमः ॥ ॐ ह्रीं सुखजाय नर्क नी ह्यं नमः ॥ ॐ श्रीवजाय मधुमा ह्यं न
मः ॥ ॐ पासाय अनामिका ह्यं नमः ॥ ॐ श्रीकृष्णाय कनिष्ठि ह्यं नमः
॥ अष्टसूत्रकायः अक्ताय रुद्र स्याहा ॥ कनन नय ष्टा ह्यं नमः ॥ ॥
श्रीगन्यास ॥ ओं खजाय हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्रीं सुखजाय जिह्वस स्याहा
॥ ॐ श्रीवजाय शिषाय वोषट् ॥ ॐ पाशाय कवचाय द्वा ॥ ॐ श्रीकृष्णाय
नग्नयाय वषट् ॥ अष्टसूत्रकायः अक्ताय रुद्र स्याहा ॥ कनन नय ष्टाः

ह्यं ॥ ॐ निःश्रीगन्यास ॥ ॥ अथ क्रिया ॥ ॥ श्रीं श्रीं नैवजवेना
चनीयं श्रीं श्रीं रुद्रं श्रीं नमः स्तादवीयाद्रुकां पूजयामि नमः ॥
३ ॥ ॥ हृदयादिः आवाहनादिः चानि मूद्रादमय ॥ ॥ अथ कठपाल
वद्रुकाः गमयति पूजा ॥ श्रीं कठपालाय पाद्रुकां पूजयामि ॥ ॐ देवलिङ्गं
रस्याहा ॥ श्रीं श्रीं कलपूत्रवद्रुकनाथाय पाद्रुकां पूजयामि ॥ ॐ देवलिङ्गं
रस्याहा ॥ गौं गौं गौं गौं ॥ श्रीं कलगमय पाद्रुकां पूजयामि ॥ ॐ देवलिङ्गं
गद्रु रस्याहा ॥ ॥ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं दक्षिणकाल्याय नमः

द वि ह्या उ क्तान् कं ह्या वलिं गृह्ण स्वाहा ॥ ओं कौं कूं नूं व ऊं वे जा व नी य कौः
 कौं द्वि नमस्कादवद वि ह्या वलिं गृह्ण स्वाहा ॥ ॥ नूं सर्व ह्या दव ह्या ह्या
 दि ॥ सर्व ह्या द कि म का ल्या दि ॥ द्वि नमस्का य ह्या म म पु ष्म न र्थ ॐ मां
 पूजा वलिं गृह्ण स्वाहा ॥ त्या क म हा व लि वि य ॥ कौं कृ त्र या ला य व लिं गृ
 ह्ण स्वाहा ॥ ॥ धूप ॥ कौं दि व्य ग न्ध स मा यू क्तः सर्व द व प्रिया सदाः आ
 ध्या नं सर्व द व ना ध्या नं पु नि गृ ह्ण नी ॥ पू ष्ठा हा नं पू रू ग वाः वि ष्व त्र पि म
 ह ष्व ती ॥ धूप ना न न व निः सूप्री नां प त्र म ष्व ती ॥ दी य ॥ सूप का स म हा

३५४१
 न क्तः सर्व त्र नि मि त्रा प हः सर्वा द्य र्थ न र क्षा तिः दी पा र्थ पु नि गृ ह्ण नी ॥ ॥
 ने व द्य ॥ ने व द्य ष्व ध नं ॥ कूं यो नो लो वो ॥ १० ॥ अ नू मू डाः अ मृ ति क
 र ॥ १० ॥ कौं अ नू म हा त र्थ दि वः त र्थ हि स म नि नः म या नि व दि नं तु ल्य
 गृ हा न य त्र म ष्व ती ॥ ने व द्य गृ ह्ण नी दे वीः रु कि म हि च त्रा कू रूः अ य मृ त्प
 ह न दे वीः य त्र तु र य त्रा ग ति ॥ ॥ कौं य ग्ग र ॥ कौं अ मृ ता पि ष्म न म सि
 क्ता य द को क्ता य ॥ ॥ जा य ॥ कौं स्वा हा ॥ १० ॥ ओं कौं स्वा हा ॥ १० ॥ (हो
 स्वा हा ॥ १० ॥ कौं कौं कौं कूं कूं कौं कौ स्वा हा ॥ १० ॥ ओं कौं कूं नूं स्वा हा ॥ १० ॥

नमो जय समर्पन ॥ गुफादि गुह्य गुह्यं वरुका ॥ यना जय माका य ॥ स
नु ॥ क्रीमाल रण अकमाला येनम ॥ क्रीसिद्धि स्थैर्य गहा मम कनै जय
सिद्धि रुव नुभद विः स्वपु म्भदामह स्थयी ॥ ॥ क्री ॥ ॥ अख सु
मभुला कालः वार्क जन वला वनः न त्यदं द निर्मः जन न स्मै गी गुन स्थानमः
४ ॥ ॥ श्रीमहा हे नव उवाच ॥ श्री सर्व लो मभुला नै त्यादि ॥ ॥ श्रीमहाः
काल उवाच ॥ कर्पू नै मध्व मा न्य स्व नय निरहि नैः सै न्द्र वा म दक्षि यू कः वी
ई नै मा न नै गु म्भ न ह न व धृ ति ४ क न य ज व निः न वी ग द्या नि य द्या नि च

मुख कुरु नो दूतः सख्य ववाच ४ सु क न्द ध्व नि धा ना ध न रू वि नू वि नू सर्व
सिद्धि गतानां ॥ समा स ४ सि हू नां जय वि य नि ना य दि म दा वि वि न्य त्या
ध्व यः नू नि गाय महा काल सु ल नां न दा न स्य क्ता भी न ल वि ह न मा न स्य
वि न्द्र वि ४ क री हा जै व ध्व ह न व धू महा सिद्धि नि व हा ४ ॥ कू रू मा क्री व
नै नः म न स न ति प्र म न ल व न स्य क्ता ध्या नि न पि क द न प्र ति नि धि ४ ॥
नि प्र ४ का ग ग नै क ल य नि व न क्क लि क याः वि नै डि व मू क ४ प्र ह व नि सु
रू क ४ प्र ति ज नि ४ ॥ ना हो सु द स न जः न त्र विल स द्ध न्ध क प्र षा नू

नाथियकय प्रायिः सन (महद्वीपनि ४॥ नुर्वहिसकला दवाः सर्व
सिद्धि (मप्राविह ४॥ ॥ श्रीजगन्मंगलनामकवचस्य मुखिसि
वाह्य नानुपुष्टवनायः दकि (मकालिक निव ४॥ जगनामाहयः दष्ट
विजयहकि मकिषः॥ थाविदाकर्षणैवः विनियोग ४ पुकिर्लिर्न
४॥ ॥ ॐ सिनामकालिकापातुः॥ क्रीकात्रकाक्रपायनः॥ क्रीक्री
क्रीमल्लानं वः॥ कालिकाखड्गधामिनाः॥ दूँ दूँ पातु ननु यूर्गम ॥ क्री
क्रीपातु हकि निमम ॥ दकि (मकालिक पातु ॥ द्यानयूर्गम मह ४ प ग्री ४॥

क्रीक्रीक्रीयसनापातु ॥ दूँ दूँ पातु कपोलयो ॥ वदनीसकलीपातु ॥
क्रीक्रीस्वाहासुत्रपिनाः॥ दार्विसहक्रीर्क (धः॥ महाविद्या ४ सुख
पुदा ४॥ खड्ग मुमुषनाकाली ४॥ सर्वागमहिनावनु ॥ क्रीदूँ क्रीमः
क्रीपातु ॥ वामुमुहदयमम ४॥ नूँ क्रीग्री नूँ कनदद ४॥ क्रीरुदू
स्वाहाककथल ४॥ अष्टाक्रीमहाविद्या ॥ हूँ क्रीपातु सकहक ४॥
क्रीक्री दूँ दूँ क्रीक्री क्रीपातु वद क्रीमम ४॥ क्रीनाहिम (ध ४ जीव
॥ दकि (मकालिक वद ४॥ क्रीस्वाहापातु पृष्टव ४॥ कालिकासद

साकू न ४ ॥ कूँकीँ दंकि (सकालिक कूँकीँ पाठु कठिद्वयं ४ ॥ कालि
दशमकृतिविद्या ४ ॥ स्वाहासनातु यूगमंकी ४ ॥ ॐ कूँकीँ मस्वाहापाठु
॥ कालिका जानू निसदा ॥ कालिह नाम विद्ययं ४ ॥ चतुर्वर्ग रूतपदा
॥ कूँकूँ कूँ स्वाहापाठु ॥ चतुर्वर्ग कृती मम ॥ खड्ग मुमुक्षुना
काली ४ ॥ वनदा हयकारी ॥ वीद्या हिसकला हिटू ४ ॥ सा सर्वाः
गमहि नो वतु ४ ॥ कालिकया लिनिकुला ॥ कूँकूँ लाविधा धिनी ४ ॥
विपुचिंता नथ ग्राम ॥ उग्रप्रहावदि फिका ॥ घनानिलावला काच ४ ॥

मातामूडा मितामिमा ४ ॥ नना सर्वखड्ग वना ४ ॥ मुमुक्षु मा लाविरुचिनी ४ ॥
नकूँ लुदिगिदि कूमी ॥ वाक्की ना ना यलिन थ ॥ माह खत्री वरामुमु
कोमात्री वायना जिना ॥ वात्राही ना नहिंदी च ४ ॥ सर्वास्या मिता हूष ॥
॥ नकूँ लुसाय (वेदि कूः विदि कूमी यथ नथ ४ ॥ ॐ नि नकथि नंदवीः
कवचं पत्रमदूनी ॥ ग्राजगर्भ गलनाम कवचं मंनु विग्रह ॥ नैलाकः
कर्षण पुष्पै रकवचं मन्त्रादिदं ॥ गुरुपूजा विधाया थः विधिव
त्युप १० लन ४ ॥ कवचं गुणक दायिः यावतू ग्यानं च वापून ॥ ननकू

स्वाङ्गमायुः ॥ नैलाक विजयी हवन् ॥ नैलाक कोरुयस्यवः कवः
वस्यप्रसादन ॥ महाक विहवन् मासान् सर्वसिद्धिः प्राप्तो हवन् ॥ दू
षाङ्गलिकालिकायैः मूलनेवप ॥ ० नृसकृन् ॥ सतवर्षमहर्षम
पूजाया रुलमापुयात् ॥ हृदये वलिषितं देवः स्वर्गं कुरुष्व यद्यदि ॥ लि
षायीदङ्गि ॥ ० वाङ्गः कं ॥ ० वाङ्गमयद्वय ॥ नैलाक कोरुयेत्कार्यं
नैलाकं दूर्ध्वयत्नं ॥ पूवपान्धनावान्ः श्रीमात्रानां विद्यानि
विहवन् ॥ पुद्गलादिनिगलाभि ॥ नदाङ्गा नृपर्णमालनः नाम

मायां नित्यानीनाः वक्ष्यन्मृगप्रतिनी ॥ कं ॥ ० वाः वामहस्तवाः कव
वस्यवक्ष्यन् ॥ वदूपत्या जीववन्माः हवन् हवन् गीत्य ॥ नदयं
पत्रहीणस्याः अरुकेत्या विमृषन् ॥ सिष्या ह्यरुकि यरुकेत्याः ना
न्यनामृत्मापुयात् ॥ स्यर्धमूद्रयनकलाः वाग्दविमन्त्रिनमः
रवा ॥ ० गीनर्कयमात्मा यः निवमत्य विनिगितं ॥ ० दैकव
वमद्वात्वाथाः रुङ्गकालीदकी ॥ ० गलक पुङ्गफायिः न
स्यविद्यानसिध्यनि ॥ समस्तं नद्या मायां निःहा चिनामृत्मा

वीजवकुलिगीर्वदः अष्टाष्टकममनितं ॥ नमस्तु वकुवलिः नमस्तु
 स्नानदायीकः नमस्तु हेनवसूर्यः नमस्तु हवनानकः ॥ अष्टाष्टकथाः
 गिन्याः वद्रुकानानि (थेवचः हेनववव्वं मवकैः नुकाकालं नमाम्यहं
 ४ ॥ २ ॥ ला ॥ अहिनासुरवदहः अज्ञागामप्रभवः महाबलवज्र
 दहः राजग्रीमकमच्छुक् ॥ शत्रुना शत्रयवृद्धिः लक्ष्मीसुकनिवर्द्ध
 नः महापूषिहवनस्यः शायग्रीकानिवर्द्धनं ॥ प्रसायनार्यसुखस्यः द
 वनयकैर्निर्मितैः यशस्तनसिद्धयैः पीयताहवहेषकैः ॥ नंदकुक्

या ५

लयागिन्याः नंदकुक्कलपूतकाः नयंकुग्रीकृतावाक्षाः अवाच्यवनमा
 नमः ॥ नमः शत्रुनाथयनमः ॥ नमः शत्रुसिद्धिनाथयनमः ॥ नमः
 शत्रुकृत्सनाथयनमः ॥ ३ ॥ ४ ॥ वृद्धाक्षानिकियासाः सूत्रवत
 नमिताः साग्नियामङ्गनाकाः सा (गेवि सावद्रुग्नाः) रुगवतिशुहगः सा
 लकाश्वशुम्भ्याः साउक्तासावविष्णुः हजगभगकलाः हेनवीकृत्तया
 लाः सानकानकनूयाः विविधगुनदयाजागित्पात्वनमामि ॥ ४ ॥ ॥
 ॥ ॥ चक्रमामकुसिद्धिपूत्रवतवसुनैः श्वगतिप्रार्थनैः शत्रुकर्म

या २

निपूष्णः श्रुतिवलि न जयः सै मू न सर्व विद्याः दि र्घायूष कवि र्त्सः नि
वि न स गु निका ॥ पादू का काम सिद्धिः सर्वा विना द द नः ॥ श्रुति वलिः
सहिताः हे न य न्या नु यू का ४ ॥ १ ॥ ॥ नृ ग जय नि द वाः ह ज
पाद पद्म ऊः पु र्त्त मा मिः मृ न भो क दा य कः ॥ न न सिद्धा र्त्त म नि पु वाः
धि नः न मा मि वा षा ष क था गि नी ग णी ॥ या गी नी व क म ध्य षः मा रु
म लु ल व षि नः न मा मि सि ल सा ना र्थः हे न व हे न वी पि य ॥ आ र दा
दू ति ना गा ग मः स म या वा न र्त्त ना नूः सर्वा नि भ य पा रु कुः दि य व कु

स म्य न ना नूः सै पू ष का ना प नि पाल का नाः डि न दि य सा न्य न
पा ध ना नाः द स स्य ना ज स्य पू न स्य ना ज रूः क था नि णी नि रु ग वा नू क
ऊ र ॥ या सा मा र्त्ता पु रा व नः सहि न रू व ष ग र्थः न म सा र्त्त स म सा
रुः या गी नी र्त्ता या गि नि र्त्ता नि न क र्त्त ॥ न द नु सा ध का कू ल न्य सि
मा दि सिद्धाः ग म पाः य ह नु स म य दि तिः या गी नी नाः सा ग म म ह वि रू
ल निः का म पि मा य व रूः य स्या गु णा ग्य न सः प द्म ऊ म क र्त्त व ॥
न न्द नु सा ध का सिद्धाः न न्द नु कू ल या गी नीः न न्द नु सा ध का यो यार्तिः